ISSN 2582 – 8606

अर्द्धवार्षिक पत्रिका

फिरकी बच्चों की

Firkee Bachchon Ki

वर्ष 7 अंक 2 जुलाई-दिसंबर 2025

याक

था सफ़ेद बुर्राक,
बर्फ़ झाड़ के चला,
तो हमने देखा,
ये है याक।

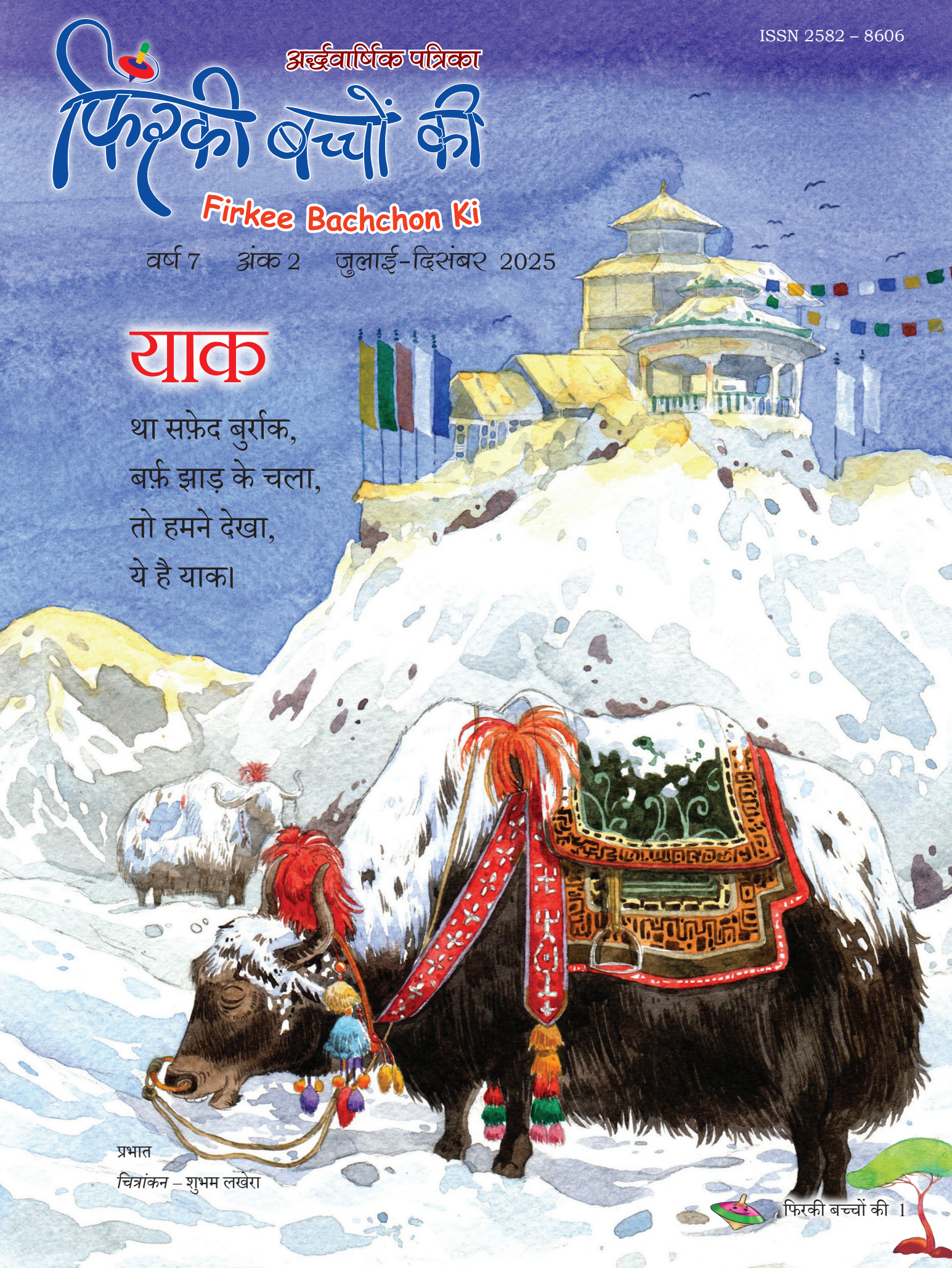

प्रभात

चित्रांकन – शुभम लखेरा

मेरी नानी

मेरा नाम राजनन्दिनी है। यह बात तब की है जब मैं 5 साल की थी। मेरे जीवन की एक ऐसी अनोखी घटना है। मेरी नानी 27 सितंबर को आई थीं। पर कुछ ही दिन के लिए! हम बहुत जगह घूमने गए। हमारे घर में पूजा थी। हमने पूरे रात मज़े किए। दूसरे दिन नानी को घर जाना पड़ा। मुझे बुरा लगा, क्योंकि मैं चाहती थी कि मेरी नानी ना जाएँ। मैं शाम तक यह सोचकर रोती रही कि नानी कब आएँगी।

राजनन्दिनी राय, कक्षा 5,
पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय,
कोकराझार,असम
चित्रांकन – निलेश गहलोत

इस अंक में

याक 1

मेरी नानी 2

लोरी 4

The Girl with Ocean Hair 5

आबूसाह खुश है। 6

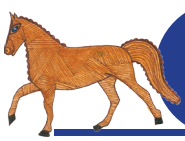
घोड़े की बहादुरी 8

कंचनजंघा पर धूप 10

बीचों-बीच 12

फूल का तोहफ़ा 14

युवानी 15

आमींग तेई तोकमा 16

जुगनू से बातचीत 18

कुछ हम लिखें, कुछ तुम लिखो! 20

दीदी बहुत सोती है! 21

देखो, मैंने क्या बनाया! 23

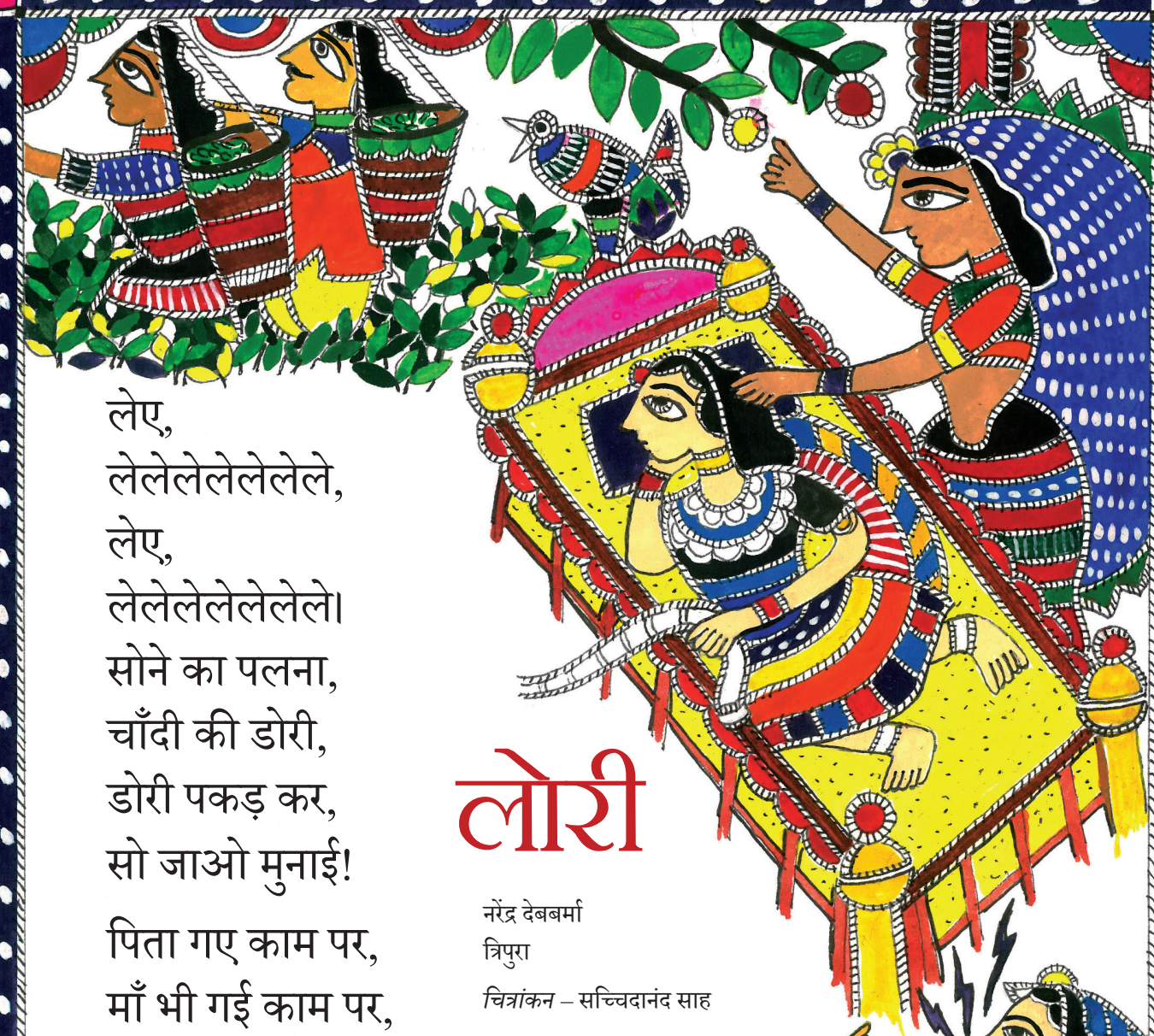

लोरी

नरेंद्र देबबर्मा
त्रिपुरा

चित्रांकन – सच्चिदानंद साह

लेए,
लेलेलेलेलेलेले,
लेए,
लेलेलेलेलेलेले।
सोने का पलना,
चाँदी की डोरी,
डोरी पकड़ कर,
सो जाओ मुनाई!

पिता गए काम पर,
माँ भी गई काम पर,
सँभालने को कोई नहीं यहाँ,
बस तुम सो जाओ मुनाई!

सोने का नाटक मत करो,
तुम सच में सो जाओ मुनाई!

तुम्हारे मुँह से निकली बात,
लाखों की होगी,
पर अभी तुम सो जाओ मुनाई!

मुनाई — बच्चा

The Girl with Ocean Hair

Once upon a time, there was a girl named Jenna. Her hair was the colour of the ocean. They were beautiful and shiny like a butterfly. She also had a dog named Lila. Jenna loved Lila.

One day, while Lila and Jenna were playing, they met a girl with striking green eyes and bright yellow hair. She was smiling warmly at them. They quickly became best friends, just like Jenna and Lila.

Kagikamliu, Class 4,
PM SHRI Kendriya Vidyalaya,
Dimapur, Nagaland

Illustration – Vineeta Mattoo

आबूसाह खुश है।

खाने को मोमो मिले तो,
आबूसाह खुश है।

कागज़ की फिरकी मिले तो,
आबूसाह खुश है।

दिन भर खेलने को मिले तो,
आबूसाह खुश है।

छुक-छुक ट्रेन में जाना हो तो,
आबूसाह खुश है।

अपना नाम किताब में मिले तो,
आबूसाह खुश है।

आबूसाह – बच्चा

बी.एम. सुब्बा, सिक्किम
चित्रांकन – हबीब अली

घोड़े की बहादुरी

एक बार भूखा शेर खाने की तलाश में था। अचानक उसे एक घोड़ा दिखाई दिया। घोड़े को देखकर शेर ने एक तरकीब लगाई। शेर ने जंगल में खबर फैला दी कि वह एक डॉक्टर भी है, मुफ़्त में सभी जानवरों का इलाज करेगा।

जब शेर जंगल में घोड़े के पास गया तो घोड़े ने आदर के साथ कहा, "डॉक्टर साहब, घूमते समय मेरे पीछे की दाहिनी टाँग में कहीं से एक काँटा चुभ गया है। मैं ठीक से चल नहीं पा रहा हूँ। मेरे पैर को ठीक कर दें। बड़ी मेहरबानी होगी।"

यह सुनते ही शेर घोड़े के पीछे वाली टाँग के पास गया। शेर सोचने लगा— "घोड़े को खाने में मज़ा आएगा।" उसके मुँह में पानी आ गया।

इधर घोड़ा सही मौका देख रहा था। सही मौका पाते ही उसने शेर को दुलत्ती मारी। शेर चारों खाने चित होकर ज़मीन पर जा गिरा। घोड़ा मौका देखकर तुरंत वहाँ से भाग गया।

आसमिया लोककथा

चित्रांकन – सुनीता

कंचनजंघा पर धूप

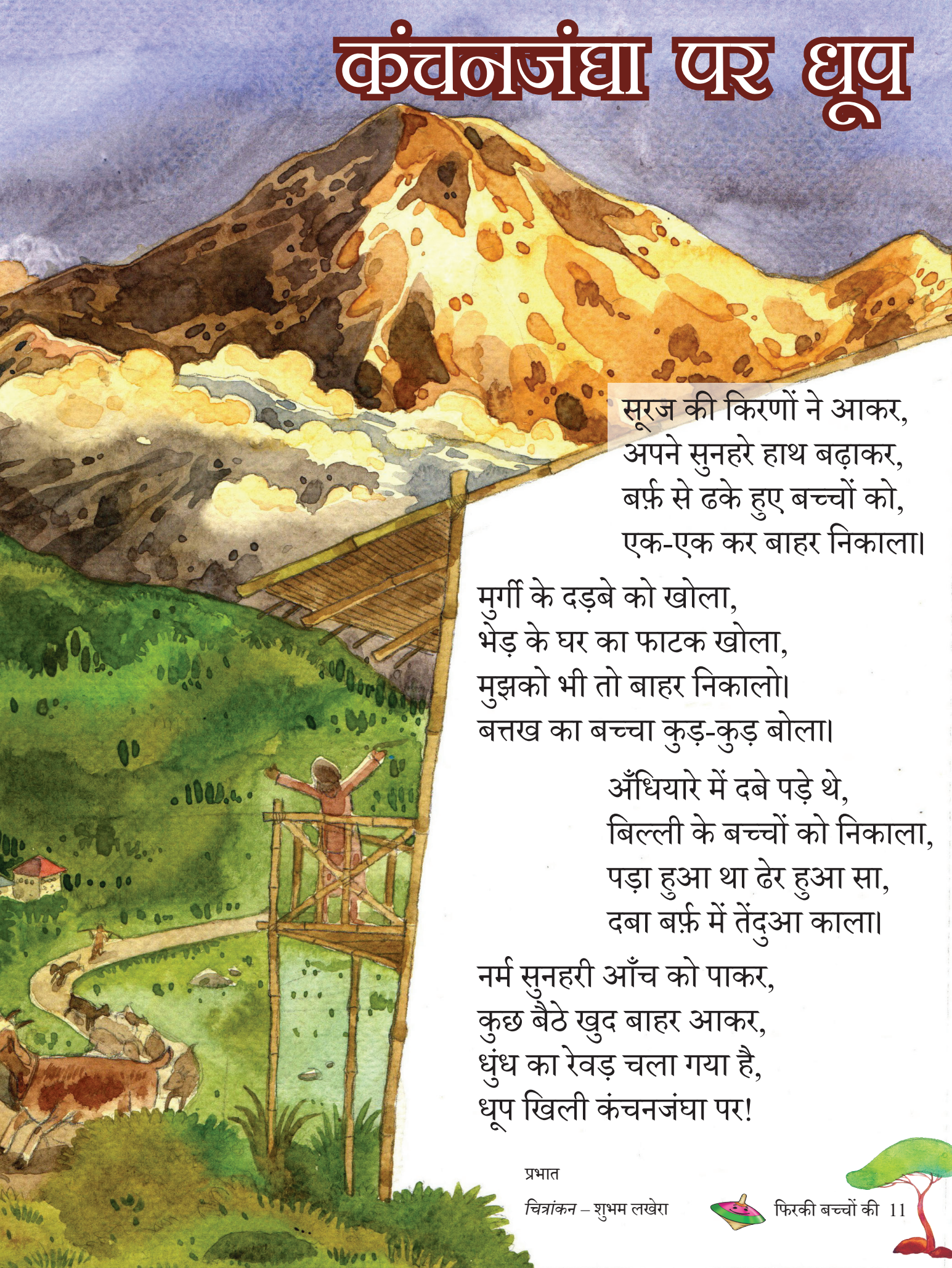

सूरज की किरणों ने आकर,
अपने सुनहरे हाथ बढ़ाकर,
बर्फ़ से ढके हुए बच्चों को,
एक-एक कर बाहर निकाला।

मुर्गी के दड़बे को खोला,
भेड़ के घर का फाटक खोला,
मुझको भी तो बाहर निकालो।
बत्तख का बच्चा कुड़-कुड़ बोला।

अँधियारे में दबे पड़े थे,
बिल्ली के बच्चों को निकाला,
पड़ा हुआ था ढेर हुआ सा,
दबा बर्फ़ में तेंदुआ काला।

नर्म सुनहरी आँच को पाकर,
कुछ बैठे खुद बाहर आकर,
धुंध का रेवड़ चला गया है,
धूप खिली कंचनजंघा पर!

प्रभात

चित्रांकन – शुभम लखेरा

बीचों-बीच

चित्रांकन – संतोष मिश्रा

फूल का तोहफ़ा

एक फूल था। वह हमेशा उदास और मुरझाया हुआ रहता था। सभी फूल उसको देखकर हँसते थे, क्योंकि उसे कोई पानी नहीं देता था। एक दिन एक लड़का वहाँ आया। वह फूल को उदास देखकर उसमें रोज़ पानी देने लगा। धीरे-धीरे फूल बढ़ता गया और खुश रहने लगा। जिससे फूल की खुशबू सब तरफ फैलने लगी। फूल को खुश देखकर वह लड़का भी बहुत खुश हुआ। वह फूल उस लड़के को कुछ देना चाहता था। फूल ने अपना एक पत्ता तोड़कर उस लड़के को दे दिया। लड़का तोहफ़ा पाकर बहुत खुश हुआ।

हेमप्रभा, कक्षा 4,
पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय,
कोकराझार, असम

चित्रांकन – सिमरन कौर

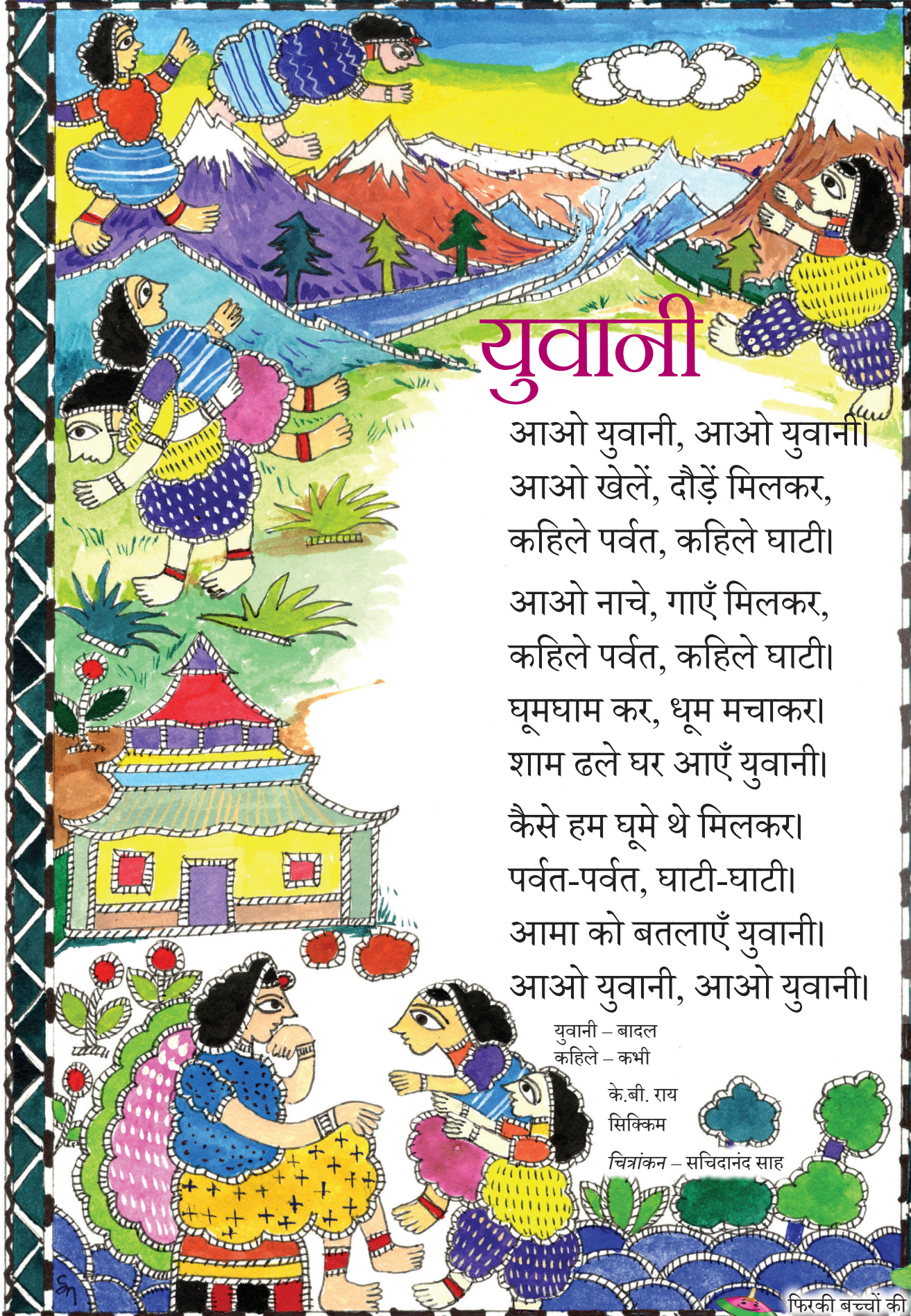

युवानी

आओ युवानी, आओ युवानी।
आओ खेलें, दौड़ें मिलकर,
कहिले पर्वत, कहिले घाटी।

आओ नाचे, गाएँ मिलकर,
कहिले पर्वत, कहिले घाटी।
घूमघाम कर, धूम मचाकर।
शाम ढले घर आएँ युवानी।

कैसे हम घूमे थे मिलकर।
पर्वत-पर्वत, घाटी-घाटी।
आमा को बतलाएँ युवानी।
आओ युवानी, आओ युवानी।

युवानी – बादल
कहिले – कभी

के.बी. राय
सिक्किम

चित्रांकन – सचिदानंद साह

आमींग तेई तोकमा

एक समय की बात है मुर्गी और बिल्ली में गहरी दोस्ती थी। किसी कारण से बिल्ली के मन में खोट पैदा हो गया और वह मुर्गी को खाने की सोचने लगी। एक दिन उसने मुर्गी से पूछा—"तुम कहाँ सोती हो? मैं सुबह तुम्हारे लिए नाश्ता लेकर आऊँगी।"

आमींग – बिल्ली
तेई – और
तोकमा – मुर्गी

बिल्ली के मन की बात मुर्गी जान गई थी। उसने कहा— "वहीं अपनी टोकरी में सोती हूँ।" उस दिन मुर्गी टोकरी के बजाय छत पर सो गई। रात को जब बिल्ली मुर्गी को खाने पहुँची तो उसे खाली हाथ लौटना पड़ा।

अगले दिन मुर्गी से बिल्ली बोली—"न जाने तुम कहाँ सो गई थी। मैं सुबह तुम्हारे लिए नाश्ता लेकर आई थी। तुम टोकरी में थी ही नहीं। खैर, आज बताओ, तुम कहाँ सोओगी? कल तुम्हारे लिए मैं फिर से नाश्ता लेकर आऊँगी।" मुर्गी ने कहा—"आज मैं छत के ऊपर सोऊँगी, तुम वहीं आ जाना।" मुर्गी उस दिन टोकरी में जाकर सो गई थी। इस बार भी बिल्ली को खाली हाथ लौटना पड़ा। इस तरह यह लुका-छिपी का खेल कई दिनों तक चलता रहा।

नरेन्द देबबर्मा
त्रिपुरा

चित्रांकन – उमा मजूमदार

जुगनू से बातचीत

मिसाय – “जुगनू! आपको देखकर मुझे बहुत मज़ा आता है। आपकी रोशनी चम-चम चमकती है।”

जुगनू – “मुझे भी आपको देखकर आनंद आता है। मुझे भी बच्चे बहुत पसंद हैं।”

मिसाय – “जुगनू ! आपके आने से मेरा घर उजला होता है।”

जुगनू – “अच्छा, सच!”

मिसाय – “हाँ, मैं सच कह रहा हूँ।”

जुगनू – “अच्छा, मुझे दूसरे बच्चे के घर भी जाना है। आज मैं जाता हूँ, कल फिर आता हूँ।”

जुगनू चम-चम चमकते हुए उड़ गया।

मिसाय आँगन में बैठकर दूर-दूर तक जुगनू को देखता रहा।

के.बी. राय
सिक्किम
चित्रांकन – हबीब अली

सिक्किम के लोग

कुछ हम लिखें, कुछ तुम लिखो!

सिक्किम के लोग माँगें,
नीले-पीले फूल,
कहाँ से लाएँ,
नीले-पीले फूल!
सिक्किम के लोगों के घर में बगीचे,
वहाँ से लाएँ नीले-पीले फूल!

सिक्किम के लोग माँगें,
इस्कुस की भाजी,
कहाँ से लाएँ,
इस्कुस की भाजी,
सिक्किम के लोगों के,
घर में है बाड़ी,
वहाँ से लाएँ,
.....

सिक्किम के लोग माँगें,
पीने को पानी,
कहाँ से लाएँ,
.....

सिक्किम के लोग माँगें,
.....
.....
.....

प्रभात

चित्रांकन – शशि शेट्ये

दीदी बहुत सोती है!

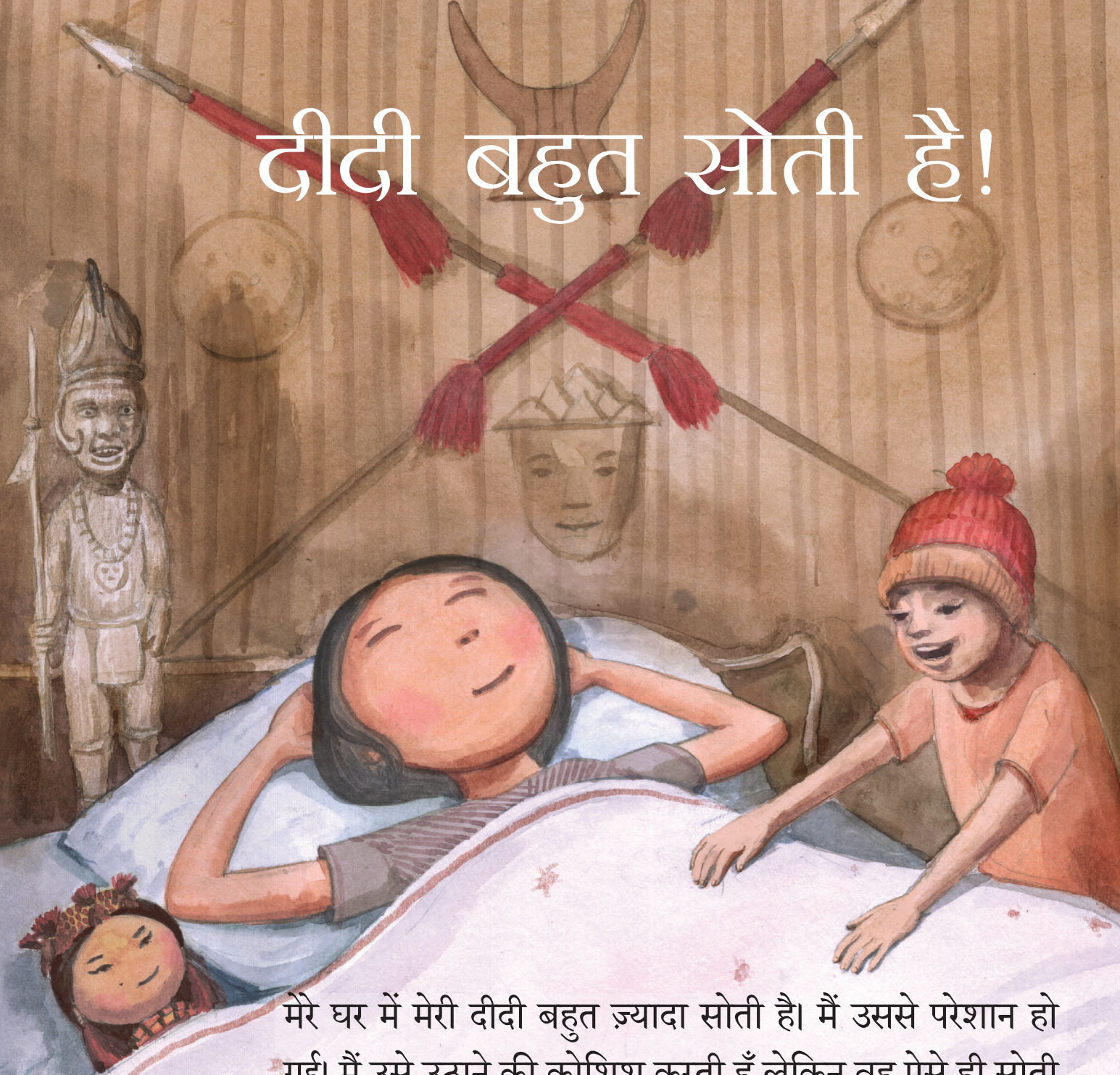

मेरे घर में मेरी दीदी बहुत ज़्यादा सोती है। मैं उससे परेशान हो गई। मैं उसे उठाने की कोशिश करती हूँ लेकिन वह ऐसे ही सोती है। जब जगती है तो तैयार होकर जल्दी-जल्दी खाना खाती है और मुझसे कहती है, “तुम मुझे जल्दी क्यों नहीं उठाती हो?” वह अपने फोन में अलार्म लगाती है, फिर भी जल्दी नहीं उठती है।

प्रियंका डेका, कक्षा 4,
पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय,
डिमापुर, नागालैंड
चित्रांकन – नीलेश गहलोत

उसने मुझे बोला—"प्लीज मुझे चार बजे उठा देना।" मैंने कहा — "ठीक है।" मैंने उसे चार बजे जगाया तो वह नहीं जागी। मैंने उसके मुँह पर पानी फेंक दिया। उसकी आँख खुली और वह झट से जग गई। उसने कहा— "बहन, तुम मुझे रोज़ ऐसे ही जगाना।"

मैंने कहा—"ठीक।"

अब मैं उसे रोज़ ऐसे ही जगाती हूँ।

देखो, मैंने क्या बनाया!

रिया कुमारी – कक्षा 2, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय, डिमापुर, नागालैंड

हन्नोरा हर्लीन देमारी – कक्षा 2, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय, कोकराझार, असम

रिचांशी – कक्षा 4, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय दीमापुर, नागालैंड

सृजीता दे – कक्षा 2, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय, कोकराझार, असम

नेहा रॉय – कक्षा 4, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय, कोकराझार, असम

प्रणीति पॉल – कक्षा 4, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय डिमापुर, नागालैंड

प्राची राजवंशी – कक्षा 1, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय कोकराझार, असम

क. कीर्ति – कक्षा 5, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय डिमापुर, नागालैंड

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	एम. वी. श्रीनिवासन
मुख्य संपादक	:	बिज्ञान सुतार
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	अमिताभ कुमार
मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी)	:	जहान लाल
सहायक संपादक	:	मीनाक्षी
उत्पादन अधिकारी	:	दीपक जैसवाल

सर्वाधिकार सुरक्षित

» प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

» इस दस्तावेज की आंशिक या समग्र रूप से समीक्षा, सारांश, पुनः उत्पादन अथवा अनुवाद किया जा सकता है लेकिन इसे न तो विक्रय के लिए और न ही किसी व्यावसायिक उद्देश्य के लिए उपयोग में लाया जाए।

» इस पत्रिका की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पत्रिका अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।

संपादन मंडल

शैक्षणिक संपादक	उषा शर्मा
संपादन मंडल	कीर्ति कपूर
	ज्योत्स्ना तिवारी
	मीनाक्षी खार
	संध्या सिंह
सहयोग	प्रिति कुमारी
	अयाज़ अहमद अंसारी
	पारुल त्यागी
	अलका दिवाकर
साज-सज्जा	राजेश हांडा, डिजिटल एक्स्प्रेशन्स

सुझावों तथा प्रतिक्रियाओं के लिए संपर्क करें

उषा शर्मा (शैक्षणिक संपादक)
कक्ष संख्या 307, तीसरी मंज़िल, जी. बी. पंत ब्लॉक
एन.सी.ई.आर.टी., श्री अरविंद मार्ग,
नई दिल्ली – 110016
दूरभाष – 011-26592293
ईमेल- firkeebachchonki.ncert@gmail.com

₹100.00

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING
www.ncertbooks.ncert.gov.in/portal
Registration no. DELBIL/2019.77753

ISSN 2582 – 8606

PD 2T M

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2025

100 जी.एस.एम. आर्ट पेपर पर मुद्रित

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित तथा एजुकेशनल स्टोर्स, एस–5, बुलंदशहर रोड, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट–I गाज़ियाबाद (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।